भारत सरकार

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

लोक सभा

तारांकित प्रश्न संख्या : *257

उत्तर देने की तारीख: 05.08.2026

अल्पसंख्यक समुदायों में पारंपरिक कारीगरों की आजीविका से संबंधित स्थिति

***257. श्री उम्मेदा राम बेनीवाल:**

क्या **अल्पसंख्यक कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या शिल्प और अन्य पारंपरिक व्यवसायों में संलगन अल्पसंख्यक समुदायों में पारंपरिक कारीगरों की आजीविका से संबंधित स्थिति के बारे में कोई आकलन किया गया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या ऐसे कारीगर समुदायों द्वारा उत्पादित उत्पादों के संरक्षण, संवर्धन और उनके लिए बाजार उपलब्ध कराने हेतु कोई योजनाएं या कार्यक्रम कार्यान्वित किए जा रहे हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या ऐसे समुदायों में घटती आय, बाजार सुलभता और पारंपरिक कौशलों को निरंतर संरक्षित रखने से संबंधित किन्हीं चुनौतियों की पहचान की गई है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) सरकार द्वारा राजस्थान में बाड़मेर जिले में रहने वाले अल्पसंख्यक समुदायों सहित अन्य अल्पसंख्यक समुदायों की स्थायी आजीविका को बढ़ावा देने और उनके पारंपरिक कारीगर कौशलों के संरक्षण के लिए क्या उपाय किए गए हैं?

उत्तर

अल्पसंख्यक कार्य मंत्री

(श्री किरेन रीजीजू)

(क) से (घ): विवरण सदन के पटल पर रख दिया गया है।

*****

'अल्पसंख्यक समुदायों में पारंपरिक कारीगरों की आजीविका से संबंधित स्थिति' विषय पर माननीय सांसद श्री उम्मेदा राम बेनीवाल द्वारा पूछे गए तथा दिनांक 05.08.2026 को उत्तर दिए जाने हेतु लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या *257 के भाग (क) से (घ) के उत्तर में संदर्भित विवरण

(क) अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय ने वर्ष 2015-16 में तत्कालीन **"विकास के लिए परम्परागत कला/शिल्प में कौशल का उन्नयन और प्रशिक्षण (USTTAD) योजना"** का प्रभाव आकलन **मैनेजमेंट डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (MDI)** के माध्यम से कराया था। इस मूल्यांकन में योजना के कार्यान्वयन एवं परिणामों की समीक्षा की गई तथा अन्य बातों के साथ-साथ सोशल मीडिया एवं मोबाइल आउटरीच माध्यमों से योजना के व्यापक प्रचार-प्रसार, मास्टर कारीगरों की क्षमता में बढ़ोत्तरी, स्थानीय भाषा एवं डिजिटल सामग्री के माध्यम से प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार, उद्यमिता, स्वयं सहायता समूहों (SHGs), बैंकिंग संपर्क एवं बाजार तक पहुंच को बढ़ावा देने, बेहतर समन्वय एवं निगरानी के लिए परियोजना प्रबंधन इकाई की स्थापना, समय-समय पर कौशल-अंतराल आकलन तथा विपणन एवं ऋण सुविधाओं से जुड़ाव के अवसर बढ़ाने की सिफारिश की गई थी। तत्पश्चात USTTAD योजना का वर्ष 2021-22 में **प्रधानमंत्री विरासत का संवर्धन योजना** में विलय कर दिया गया।

(ख) PM VIKAS योजना के **पारंपरिक कौशल** घटक के अंतर्गत छह अधिसूचित अल्पसंख्यक समुदायों से संबंधित कारीगरों की पारंपरिक कला एवं शिल्प के संरक्षण और संवर्धन के साथ-साथ उनकी आजीविका के अवसरों को बढ़ाने हेतु विभिन्न कार्यकलाप किए जाते हैं। विपणन एवं बाजार तक पहुंच को बढ़ावा देने के लिए मंत्रालय द्वारा **"हुनर हाट"** जैसे कारीगर विपणन कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिन्हें PM VIKAS योजना के अंतर्गत **"लोक संवर्धन पर्व"** नाम दिया गया है। ये आयोजन अल्पसंख्यक समुदायों के कारीगरों एवं पाक-कला विशेषज्ञों को अपने हस्तशिल्प, हथकरघा उत्पादों, स्वदेशी उत्पादों एवं पारंपरिक व्यंजनों के प्रदर्शन एवं बिक्री हेतु मंच प्रदान करते हैं, साथ ही क्रेता-विक्रेता संवाद एवं बाजार संपर्क को भी सुगम बनाते हैं। अब तक देश के विभिन्न स्थानों पर **41 हुनर हाट** तथा **6 लोक संवर्धन पर्व** आयोजित किए जा चुके हैं।

(ग) और (घ) पारंपरिक कारीगरों के समक्ष आने वाली चुनौतियों में सीमित बाजार पहुंच, बड़े पैमाने पर निर्मित उत्पादों से प्रतिस्पर्धा, ऋण सुविधाओं तक अपर्याप्त पहुंच, उपभोक्ताओं की बदलती पसंद तथा युवा पीढ़ी में पारंपरिक व्यवसायों के प्रति घटती रुचि आदि शामिल हैं। PM VIKAS योजना के अंतर्गत कौशल उन्नयन, उद्यमिता विकास, डिजाइन एवं प्रौद्योगिकी सहायता, बाजार संपर्क, ब्रांडिंग, प्रदर्शनियां तथा डिजिटल विपणन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस योजना के माध्यम से कारीगरों एवं शिल्पकारों के लिए क्षमता निर्माण, संस्थागत सहयोग तथा बेहतर आजीविका अवसरों को भी प्रोत्साहित किया जाता है। इन प्रयासों का उद्देश्य पारंपरिक कला एवं शिल्प का संरक्षण करते हुए कारीगर समुदायों की आर्थिक व्यवहार्यता को बढ़ाना तथा उनके लिए स्थायी आजीविका सुनिश्चित करना है।

सरकार ने बाड़मेर जिले सहित देशभर में, अल्पसंख्यक समुदायों के लिए स्थायी आजीविका को बढ़ावा देने और उनके पारंपरिक कारीगर कौशल के संरक्षण हेतु क्षमता निर्माण एवं विपणन सहायता सहित अनेक कदम उठाए हैं, और USTTAD योजना के अंतर्गत **राजस्थान के बाड़मेर जिले** के 390 कारीगरों को भी प्रशिक्षण प्रदान किया गया था।

*****